

श्रीमहागणपतये नमः

SUB : METHOD OF VARNAKRAMA CHANTING

Description of Varnakramas are classified under five heads.

1. Suddha Varna krama (शुद्धवर्णक्रमः)
2. Swaravarnakrama (स्वरवर्णक्रमः)
3. Matravarnakrama (मात्रावर्णक्रमः)
4. Angavarnakrama (अङ्गवर्णक्रमः) and
5. Varna Sarabhutha varna Krama. (वर्णसारभूतवर्णक्रमः)

1. शुद्धवर्णक्रमः

In sudhdha varnakrama the mere letters in a word are uttered in the order.

2. स्वरवर्णक्रमः

In swara varnakrama the letters in a word are mentioned in the order with the additon of prayathna and Swara to the Vowels.

3. मात्रावर्णक्रमः

In Maatra varna krama the time taken for the utterance of every letter in a world is revealed.

4. अङ्गवर्णक्रमः

In anga varnakrama whether a consonant(व्यञ्जनं) is the former or the latter part of a vowel is disclosed.

5. वर्णसारभूतवर्णक्रमः

In varna saara bhuta varnakrama the eight angas. ध्वनि, स्थानं, करणं, प्रयत्नः, कालः, सवरः, देवता and जातिः Every letter in a word.



ओं नमः सभाभ्यः सभापतिभ्यश्च वो नमः ॥

1. सभापतिभ्यः

(शुद्धवर्णक्रमः) सकार अकार, भकार आकार, पकार अकार, तकार इकार, आगम बकार भकार यकार अकार, विसर्जनीयाः ॥

2. सभापतिभ्यः

(स्वरवर्णक्रमः) सकारानुदात्त अकार, भकारोदात्त आकार, पकाराल्पतरप्रयत्न तैरोव्यञ्जन स्वरित अकार, तकार प्रचयइकार, आगमबकार भकार यकार अकार, विसर्जनीयाः

3. सभापतिभ्यः

(मात्रावर्णक्रमः) अर्धमात्रिक सकार, एकमात्रिकानुदात्त अकार अणुमात्रिक विराम, अर्धमात्रिक भकार, द्विमात्रिकोदात्त आकार अणुमात्रिक विराम, अर्धमात्रिकपकार, एकमात्रिकाल्पतर प्रयत्न तैरोव्यञ्जन स्वरित अकार अणुमात्रिक विराम, अर्धमात्रिक तकार, एकमात्रिक प्रचय इकार अर्धमात्रिक विराम, अणुमात्रिक आगमम बकार, अणुमात्रिक भकार, अर्धमात्रिक यकार, एकमात्रिक प्रचय अकार अणुमात्रिक विराम। अर्धमात्रि विसर्जनीय द्विमात्रिक विरामाः ॥

4. सभापतिभ्यः -

(अङ्ग वर्णः) अर्धमात्रिक पराङ्गभूत सकार, एकमात्रिकानुदात्त अकार अणुमात्रिक विराम, अर्धमात्रिक पराङ्गभूतभकार, द्विमात्रिकोदात्त आकार अणुमात्रिक विराम, अर्धमात्रिक पराङ्गभूत पकार, एकमात्रिक अल्पतर प्रयत्न तैरोव्यञ्जन स्वरित अकार अणुमात्रिक विराम, अर्धमात्रिक पराङ्गभूत तकार, एकमात्रिक प्रचयइकार अर्धमात्रिक विराम, अणुमात्रिक पूर्वाङ्गभूत आगमबकार, अणुमात्रिक पराङ्गभूत भकार, अर्धमात्रिक पराङ्गभूत यकार अणुमात्रिक विराम, अर्धमात्रिक पूर्वाङ्गभूत विसर्जनीय द्विमात्रिक विरामाः ॥

5. सभापतिभ्यः

(स) (वर्णसारभूत वर्णक्रमः) विवृतकण्ठोत्थित विवाराधोष महाप्राणाख्य बाह्यप्रयत्न विशिष्टश्वास ध्वनिजनित उत्तरदन्तमूल अधोभागस्थान विवृत मध्यजिह्वाग्रकरणविवृत प्रयत्नार्थमात्रिक पराङ्गभूत भूमिदेवताक शूद्रजातिक सकार।

तथाभूतौष्ठकरण संवृत प्रयत्नैकमात्रिक अग्निदेवताकक्षत्रिजाति तमोगुणसहित कनिष्ठाङ्गुल्याद्यरेखान्यास योग्य, शरीर हासैधित गळविलविनिस्सृत मृदुध्वनिक वृषभरुत तुल्य ऋषभस्वरहेतु भूत हृदय स्थानोत्पन्न ह्रस्वानुदात्त स्वरगुणक वायुदेवताक ब्राह्मण जात्यकार अणुमात्रिक विराम।

(भ) मध्यकण्ठोत्थित संवार घोष महाप्राणाख्य ब्राह्मप्रयत्न सहित हकार ध्वनिजनित उत्तरोष्ठस्थानाधरोष्ठकरण स्पृष्ट प्रयत्नार्धमात्रिक पराङ्गभूत चन्द्र देवताक क्षत्रिय जीतिक भकार।

(आ+उदात्तस्य) संवृतकण्ठोत्थित संवाराख्य ब्राह्मप्रयत्नसहित नादध्वनिजनित अतिव्यक्त कल्पहनुस्थान तथाभूतौष्ठ करण विवृतप्रयत्नद्विमात्रिक भूमिदेवताक ब्राह्मण जाति सत्वगुण सहिततर्जन्यङ्गुलि मध्यरेखान्यासयोग्य शरीरायामाश्लक्षणी कृत गळबिलविनिस्सृत परुषध्वनिकाजारुत तुल्य गान्धार स्वरहेतुभूत मूर्धस्थानोत्पन्नोदान्त स्वर गुणक वायुदेवताक ब्राह्मण जात्यकारणुमात्रिक विराम।

(प) विवृत कण्ठोत्थित विवाराघोषाल्प प्राणाख्य बाह्य प्रयत्न विशिष्टश्वासध्विजनित उत्तरोष्ठस्थानाधरोष्ठ करण स्पृष्ट प्रयत्नार्धमात्रिक पराङ्गभूत वायुदेवताक ब्राह्मण जातिक पकार,

(अ+तैरोव्यञ्जनस्वरितस्य) संवृत कण्ठोत्थित संवाराख्य बाह्यप्रयत्न सहित नाद ध्वनि जनित अत्युपसंहृत कल्पहनुस्थान तथा भूतौष्ठ करण संवृत प्रयत्नैकमात्रिक चन्द्रदेवताक वैश्वजातिरजोगुणसहितानामिकाङ्गुल्यन्त्य रेखान्यास योग्य उच्चैष्वष्टव नीचैष्वट्ठ धर्मद्वयसमाहतिजनित तदाश्रयविजातीय हयहेषातुल्य धैवतस्वरहेतुभूत कर्णमूल स्थानोत्पन्नाल्परप्रयत्न तैरोव्यञ्जन स्वरित स्वरगुणक वायुदेवताक ब्राह्मण जात्यकार अणुमात्रिक विराम।

(त) (वर्णसारभूतवर्णक्रमः) विवृत कण्ठोत्थित विवाराधोषाल्प प्राणाख्य बाह्यप्रयत्न विशिष्ट श्वासध्वनिजनित उत्तरदन्तमूल धोभागस्थान जिह्वाग्रकरण स्पृष्ट प्रयत्नार्धमात्रिक पराङ्गभूत वायुदेवताक ब्राह्मणजातिक तकार,

(इ+प्रचयस्य च) संवृत कण्ठोत्थित संवाराख्य बाह्यप्रयत्न सहित नाद ध्वनि जनित तालुस्थानाल्युत संहृत कल्पौष्ठ सहित जिह्वामध्य करण विवृत प्रयत्नैक मात्रिक, सूर्य देवताक शूद्रजाति

सर्वास्य स्थानोत्पन्न प्रचय स्वरगुणक अग्निदेवताक ब्राह्मणजातिक इकार अर्धमात्रिक विराम ।

(ब) संवृत कण्ठोत्थित संवार घोषाल्प प्राणाख्याबाह्य प्रयत्नसहित नादध्वनि जनित उत्तरोष्ठस्थानाधरोष्ठ करण स्पष्ट प्रयत्नाणुमात्रिक पूर्वाङ्गभूत भूमिदेवताक क्षत्रियजात्यागम बकार,

(भ) मध्यकण्ठोत्थित संवार घोषमहाप्राणाख्य बाह्य प्रयत्न सहित हकार ध्वनि जनित उत्तरोष्ठस्थानाधरोष्ठकरण स्पृष्ट प्रयत्नाणुमात्रिक पराङ्गभूत चन्द्र देवताक क्षत्रिय जातिक भकार ।

(य) संवृत कण्ठोत्थित संवारघोषाल्प प्राणाख्य बाह्य प्रयत्न सहित नाद ध्वनि जनित तालुस्थान जिह्वामध्य पार्श्वभागकरणेषत्स्पृष्ट प्रयत्नार्धमात्रिक पराङ्गभूत वायुदेवताक वैश्य जातिक यकार ।

(अ) संवृत कण्ठोत्थित संवाराख्य बाह्यप्रयत्न सहित नादध्वनिजनित अत्युपसंहृत कल्प हनुस्थान तथा भूतौष्ठ करण संवृत प्रयत्नैकमात्रिक सूर्यदेवताक शूद्रजाति तमोगुणसहित मध्यमाङ्गुलि माध्यरेखान्यास योग्य उच्चकल्प तद्विलक्षण क्रौञ्चकणनतुल्य मध्यमस्वरहेतुभूत सर्वास्यस्थानोत्पन्न प्रचय स्वर गुणक वायु देवताक ब्राह्मण जात्यकार अणुमात्रिक विराम ।

(विसर्जनीयस्य) विवृत कण्ठोत्थित विवाराघोष महाप्राणाख्य बाह्यप्रयत्नं विशिष्टश्वास ध्वनि जनित कण्ठोपरि भाग स्थान तदधोभाग करण विवृत प्रयत्नार्धमात्रिक पूर्वाङ्गभूत सूर्यदेवताकशूद्रजातिक विसर्जनीय द्विमात्रिक विरामाः ॥ ॥सभापतिब्ध्ययः ॥ओम् ॥

॥शुभंभूयात्॥

From
HUMBLE AASTHIKAS

Reward Your Curiosity

Everything you want to read.
Anytime. Anywhere. Any device.

Read free for 30 days

No Commitment. Cancel anytime.

